राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना, 2005 की प्रमुख समस्याएँ

Main Problems of National Curriculum Framework, 2005

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम सन् 2005 के निर्माण में तथा इसके सफलतम क्रियान्वयन में अनेक प्रकार की बाधायें उत्पन्न हुई हैं, जिनका समाधान करना अनिवार्य है। पाठ्यक्रम के निर्माण करने तथा उसके क्रियान्वयन को पूर्णतः समस्याओं से रहित होना चाहिए, जिससे उसको क्रियान्वित करने वालों के समक्ष किसी भी प्रकार की समस्या न हो। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम सन् - 2005 की संरचना एवं क्रियान्वयन समबंधी प्रमुख समस्याएँ निम्न-लिखित हैं :—

1. शिक्षक संबंधी समस्याएँ
2. भाषाओं की समस्या
3. धर्म संबंधी समस्याएँ
4. संसाधनों का अभाव
5. वैश्वीकरण का प्रभाव
6. राजनैतिक समस्याएँ
7. क्रियान्वयन एवं निर्णय की समस्या

(1) शिक्षक संबंधी समस्याएँ :—
पाठ्यक्रम का निर्माण उचित शिक्षक संख्या के आधार पर किया जाता है,

जबकि शिक्षक कम संख्या में होते हैं, जिससे पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन उचित प्रकार से नहीं होता है। पाठ्यक्रम में प्रस्तुत अनेक बिन्दुओं पर शिक्षकों की संख्या संबंधी समस्या उत्पन्न हो जाती है। जैसे छात्र को प्रारंभ के दो वर्षों में मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। यह सुझाव राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना सन् 2005 का है, परन्तु शिक्षकों की उपलब्धता जो कि विभिन्न भाषाओं का ज्ञान रखते हों, संभव नहीं है क्योंकि एक विद्यालय में भोजपुरी, हिन्दी एवं उर्दू मातृभाषा के छात्र पाये जा सकते हैं। द्वितीय स्तर पर विद्यालयों की संख्या तो अधिक है परन्तु शिक्षकों की संख्या नगण्य है।

(2) भाषाओं की समस्या :—
भाषा की समस्या राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना सन् 2005 के समय की उत्पन्न हुई कि शिक्षण का माध्यम कौन-सी भाषा हो? कौन-सी भाषा को पाठ्यक्रम में प्रमुख स्थान प्रदान किया जाए? भारतीय समाज में अनेक प्रकार की भाषाओं का प्रचलन होने के कारण भाषाओं ने विवाद की स्थिति उत्पन्न कर दी है। प्रत्येक राज्य

अपनी भाषा की उपेक्षा का दोष लगाना आरम्भ कर देता है कि उसकी भाषा को पाठ्यक्रम में उचित स्थान प्रदान नहीं किया जा रहा है। भाषा विवाद की जो स्थिति प्रारंभ में थी, वही समस्या आज भी विद्यमान है।

(3) धर्म सम्बन्धी समस्याएँ :- धर्म संबंधी समस्या राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना : 2005 की प्रमुख समस्या रही। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की संरचना करते समय धर्म की सीमितता को ध्यान में रखना पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप पाठ्यक्रम में उन विषयों का समावेश नहीं हो पाता है जिनकी आवश्यकता अनुभव की जाती है, जैसे वर्तमान समय में कम्प्यूटर की व्यवस्था होनी चाहिए, परंतु धनाभाव के कारण यह संभव नहीं हो पाता है।

(4) संसाधनों का अभाव :- भारत एक विशाल देश होने के कारण संसाधनों का अभाव पाया जाना स्वभाविक है। संसाधनों के अभाव में महत्वपूर्ण विचार-विमर्श न होने के कारण संसाधनों का अभाव पाठ्यक्रम संरचना में एक प्रमुख बाधा है।

(5) वैश्वीकरण का प्रभाव :-
वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव भी पाठ्यक्रम संरचना की एक प्रमुख समस्या है। वैश्वीकरण के कारण प्रत्येक देश के पाठ्यक्रम, शिक्षा व्यवस्था, शिक्षा दर्शन एवं उद्देश्यों का ज्ञान दिया जाता है। अतः भारत के पाठ्यक्रम निर्माता भी विश्वस्तरीय पाठ्यक्रम निर्माण करने के प्रयत्न में लगे रहते हैं। संसाधन एवं विस्तृत सोच के अभाव के कारण पाठ्यक्रम का स्वरूप विश्व स्तर पर श्रेष्ठ गणना में नहीं आ पाता है।